

हिन्दी में

॥ ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः ॥

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

पूजा विधि, सामग्री, मंत्र और आरती सहित



vaibhavlakshmi.com



विषय-सूची CONTENTS

01	पूजा सामग्री	आवश्यक वस्तुओं की सूची	3
02	व्रत विधि	उपवास, संध्या पूजा, आरती विधि	5
03	वैभव लक्ष्मी व्रत कथा	छह भागों में संपूर्ण कथा	8
	पहला भाग: शीला और उसका सुखी घर		8
	दूसरा भाग: बुरी संगत और घर की बर्बादी		9
	तीसरा भाग: द्वार पर आई एक बूढ़ी माँ		10
	चौथा भाग: माँजी ने बताया वैभव लक्ष्मी व्रत		11
	पांचवां भाग: पहले शुक्रवार से बदलने लगा भाग्य		12
	छठा भाग: उद्यापन और माँजी का रहस्य		13
04	व्रत मंत्र	या रक्ताम्बुजवासिनी, भावार्थ सहित	14
05	माँ लक्ष्मी की आरती	ॐ जय लक्ष्मी माता	15
06	आरती का अर्थ	हर पद का सरल अर्थ	16
07	समापन प्रार्थना	क्षमा प्रार्थना, जयकारा	17

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः ॥

माँ वैभव लक्ष्मी की
संपूर्ण व्रत कथा

VAIBHAV LAKSHMI VRAT KATHA

हर शुक्रवार संध्या के समय माँ वैभव लक्ष्मी का पूजन करके यह कथा
श्रद्धा से पढ़ें या सुनें, फिर व्रत मंत्र बोलकर आरती करें और सबको प्रसाद
बाँटें।

पूजा की तैयारी

वैभव लक्ष्मी पूजा सामग्री

शुक्रवार की पूजा और उद्यापन के लिए आवश्यक वस्तुएँ

वैभव लक्ष्मी व्रत की पूजा सामग्री सरल है और अधिकतर घर में ही मिल जाती है। महँगी वस्तुओं की आवश्यकता नहीं: व्रत पुस्तिका की परंपरा में महँगी सामग्री से अधिक श्रद्धा, स्वच्छता और नियमितता पर बल है। पहले शुक्रवार से पहले इस सूची से तैयारी कर लें, फिर पूजा के चरणों के लिए व्रत विधि देखें।

परिवारों के अनुसार सामग्री में थोड़ा अंतर होता है। जहाँ कोई विकल्प प्रचलित है, वह नीचे बताया गया है।

॥ पूजा स्थान के लिए ॥

- ❖ लकड़ी की चौकी या कोई स्वच्छ ऊँचा स्थान, जिससे आप पूर्व की ओर मुख करके बैठें
- ❖ चौकी पर बिछाने के लिए लाल कपड़ा
- ❖ माँ वैभव लक्ष्मी का चित्र, यदि संभव हो तो श्रीयंत्र और लक्ष्मी के आठ स्वरूपों वाला, जैसा व्रत पुस्तिका में छपा होता है
- ❖ बैठने के लिए स्वच्छ आसन

॥ कलश के लिए ॥

- ❖ ताँबे या पीतल का कलश (दूसरा न हो तो कुछ लोग स्टील का लोटा रखते हैं)
- ❖ भरने के लिए स्वच्छ जल
- ❖ कलश के नीचे ढेरी बनाने के लिए चावल (अक्षत), और चढ़ाने के लिए थोड़े अतिरिक्त
- ❖ कलश के मुख पर रखने के लिए छोटी कटोरी
- ❖ कटोरी में रखने के लिए सोने या चाँदी का गहना; न हो तो सिक्का या नोट

॥ पूजन के लिए ॥

- ❖ घी और रुई की बत्ती के साथ दीपक
- ❖ अगरबत्ती या धूप, स्टैंड सहित
- ❖ माचिस
- ❖ कुमकुम या रोली
- ❖ हल्दी

- ❖ चंदन
- ❖ लाल फूल, जैसे लाल गुलाब या गुड़हल; लाल न मिलें तो कोई भी ताज़े फूल
- ❖ पूजा की थाली और जल के लिए छोटी चम्मच या लोटा

॥ प्रसाद के लिए ॥

- ❖ खीर (दूध और शक्कर में पके चावल), सबसे प्रचलित भोग
- ❖ या कोई सफ़ेद या मीठा भोग: शक्कर, मिश्री, बताशा या मिठाई
- ❖ इच्छा हो तो फल

पूजा के बाद प्रसाद परिवार में बाँटा जाता है और व्रती उसी से व्रत खोलता है।

॥ पुस्तक और पाठ ॥

- ❖ वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तिका, जैसे यह पुस्तिका
- ❖ व्रत मंत्र और “ॐ जय लक्ष्मी माता” आरती (दोनों इस पुस्तिका में दिए गए हैं)

॥ उद्यापन के लिए अतिरिक्त सामग्री ॥

संकल्प के अंतिम शुक्रवार को कुछ और वस्तुएँ चाहिए:

- ❖ एक नारियल
- ❖ भोग के लिए खीर

वैभव लक्ष्मी

- ❖ सामर्थ्य अनुसार 7, 11, 21, 51 या 101 महिलाओं को भेंट देने के लिए वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तकें
- ❖ हर पुस्तक के साथ देने के लिए कुमकुम और छोटी भेंट (जैसे चूड़ियाँ, मिठाई या फल)

॥ पहले से तैयारी ॥

व्रत की सामग्री के लिए एक छोटा डिब्बा या ताक अलग रख लें, ताकि हर शुक्रवार सब कुछ तैयार मिले। हर पूजा के बाद कलश और कटोरी धोकर सुखा लें, चित्र को ढककर या स्वच्छ स्थान पर रखें, और फूल व खीर का दूध उसी दिन ताज़ा लें। घी, अगरबत्ती, कुमकुम, हल्दी और चावल पूरे संकल्प काल के लिए रख सकते हैं। उद्यापन से पहले कथा की पुस्तकें एक-दो सप्ताह पहले मँगवा लें, क्योंकि कई प्रतियाँ चाहिए होती हैं।



पूजन क्रम

वैभव लक्ष्मी व्रत विधि

उपवास, संध्या पूजा और उद्यापन, क्रमवार

वैभव लक्ष्मी व्रत विधि शुक्रवार का व्रत रखने और घर पर माँ वैभव लक्ष्मी की संध्या पूजा करने की सरल विधि है। इसमें न पुरोहित की आवश्यकता है, न लंबे कर्मकांड की: एक स्वच्छ स्थान, देवी का चित्र, कलश, दीपक, कथा और सच्ची श्रद्धा ही पर्याप्त है। नीचे दिए गए चरण प्रचलित व्रत पुस्तिका की परंपरा पर आधारित हैं। परिवार और क्षेत्र के अनुसार रीतियाँ बदलती हैं, इसलिए जहाँ अंतर हो वहाँ अपने बड़ों की परंपरा मानें।

॥ दिन भर का उपवास ॥

व्रत वाले शुक्रवार को सुबह से संध्या पूजा तक उपवास रखा जाता है। कई लोग दिन में केवल जल लेते हैं, जबकि कुछ फल और दूध ले लेते हैं। संध्या पूजा के बाद प्रसाद और एक समय के सादे सात्विक भोजन से व्रत खोला जाता है। गर्भवती महिलाएँ, बीमार, बुजुर्ग और दवा लेने वाले लोग डॉक्टर की सलाह लें और हल्का व्रत रख सकते हैं, जैसे फलाहार या केवल श्रद्धा से पूजा। यह चिकित्सा सलाह का विकल्प नहीं है; अस्वस्थ होने पर डॉक्टर से परामर्श लें।

वैभव लक्ष्मी

॥ पूजा स्थान की तैयारी ॥

- 1 स्नान और वस्त्र:** सुबह स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें। लाल या सफ़ेद वस्त्र प्रायः शुभ माने जाते हैं। दिन भर मन शांत रखें और कलह व कटु वचन से बचें।
- 2 पूजा स्थान की सफ़ाई:** शाम को, गोधूली के आसपास, फिर से स्नान करें या कम से कम हाथ-पैर धो लें। पूजा स्थान को साफ़ करें।
- 3 चौकी सजाएँ:** एक लकड़ी की चौकी इस प्रकार रखें कि आप पूर्व की ओर मुख करके बैठें, और उस पर लाल कपड़ा बिछाएँ।
- 4 चित्र स्थापित करें:** चौकी पर माँ वैभव लक्ष्मी का चित्र रखें, यदि संभव हो तो ऐसा चित्र जिसमें श्रीयंत्र और लक्ष्मी के आठ स्वरूप भी हों, जैसा व्रत पुस्तिका में छपा होता है।
- 5 चावल की ढेरी और कलश:** चित्र के सामने चावल (अक्षत) की छोटी ढेरी बनाएँ। ताँबे या पीतल के कलश में स्वच्छ जल भरकर उसे चावल पर रखें।



- 6 **आभूषण रखें:** कलश के मुख पर एक छोटी कटोरी रखें और उसमें सोने या चाँदी का कोई गहना रखें। गहना न हो तो सिक्का या नोट रखा जा सकता है।

॥ संध्या पूजा, चरण दर चरण ॥

- 1 **दीपक जलाएँ:** घी का दीपक और अगरबत्ती जलाएँ। कुछ क्षण शांत बैठकर माँ लक्ष्मी का स्मरण करें।
- 2 **संकल्प लें:** पहले शुक्रवार को दाएँ हाथ में थोड़ा जल, अक्षत और फूल लेकर अपना नाम बोलें, और निश्चित संख्या के शुक्रवार (प्रायः 11 या 21) व्रत रखने का संकल्प तथा अपनी मनोकामना कहें। फिर जल, अक्षत और फूल थाली में छोड़ दें। बाद के शुक्रवारों को केवल संकल्प का स्मरण करें।
- 3 **श्रीयंत्र को प्रणाम:** चित्र या पुस्तिका में दिए श्रीयंत्र को प्रणाम करें, फिर वहाँ दिखाए गए लक्ष्मी के आठ स्वरूपों को क्रम से प्रणाम करें: श्री धनलक्ष्मी (वैभव लक्ष्मी), श्री गजलक्ष्मी, श्री अधिलक्ष्मी, श्री विजयलक्ष्मी, श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी, श्री वीरलक्ष्मी, श्री धान्यलक्ष्मी और श्री संतानलक्ष्मी।
- 4 **आभूषण और कलश का पूजन:** कटोरी में रखे गहने और कलश पर कुमकुम (रोली), हल्दी और चंदन लगाएँ। अक्षत और लाल फूल चढ़ाएँ।
- 5 **प्रसाद अर्पित करें:** देवी को खीर, या कोई सफ़ेद या मीठा भोग जैसे शक्कर, मिश्री, बताशा या मिठाई अर्पित करें।

वैभव लक्ष्मी

- 6 **कथा पढ़ें:** पूरे ध्यान से वैभव लक्ष्मी व्रत कथा पढ़ें या सुनें। परिवार के सदस्य भी बैठकर सुन सकते हैं।
- 7 **मंत्र जाप:** हाथ जोड़कर नीचे दिया व्रत मंत्र पढ़ें। चाहें तो “ॐ श्री श्रियै नमः” या “ॐ महालक्ष्म्यै नमः” का 11 या 108 बार जाप भी करें।
- 8 **आरती करें:** घी के दीपक से “ॐ जय लक्ष्मी माता” आरती करें। फिर अपने शब्दों में परिवार के कल्याण और मनोकामना पूर्ति के लिए देवी से प्रार्थना करें।

॥ पूजा के बाद ॥

- 1 **आभूषण:** कटोरी से गहना उठाकर माथे पर तिलक की तरह लगाएँ या श्रद्धा से स्पर्श करें, फिर उसे सँभालकर रख दें। कई लोग इसे देवी का आशीर्वाद मानकर अलमारी या तिजोरी में रखते हैं।
- 2 **कलश का जल:** कलश का जल तुलसी के पौधे में चढ़ा दें। ढेरी के चावल पक्षियों को डाल सकते हैं या घर के चावलों में मिला सकते हैं।
- 3 **प्रसाद बाँटें:** खीर या मीठा प्रसाद परिवार में बाँटें।
- 4 **व्रत खोलें:** पहले प्रसाद लें, फिर बिना प्याज़, लहसुन, मांस या मदिरा के एक समय का सादा सात्विक भोजन करें।

॥ अंतिम शुक्रवार ॥

संकल्प के शुक्रवार पूरे होने पर अंतिम शुक्रवार को उद्यापन करके व्रत पूर्ण किया जाता है। पूजा वैसी ही होती है, साथ में खीर और नारियल चढ़ाया जाता है और महिलाओं को व्रत कथा की पुस्तक भेंट की जाती है।

॥ लक्ष्मी जी की आरती करने की विधि ॥

वैभव लक्ष्मी व्रत में आरती पूजा का अंतिम चरण है, जो कथा और मंत्र के बाद होती है। सामान्य विधि इस प्रकार है:

- 1 आरती की थाली में घी का दीपक (एक बत्ती या विषम संख्या में बत्तियाँ) या कपूर रखें, साथ में कुछ फूल, थोड़ा कुमकुम और अक्षत रखें। पास में घंटी रखें।
- 2 चौकी पर रखे माँ लक्ष्मी के चित्र और श्रीयंत्र के सामने खड़े हों। परिवार के लोग पीछे या बगल में खड़े हों।
- 3 दीपक या कपूर जलाएँ और सब मिलकर “ॐ जय लक्ष्मी माता” से आरती आरंभ करें।
- 4 सब गाते रहें और थाली को देवी के सामने धीरे-धीरे दक्षिणावर्त (घड़ी की दिशा में) घुमाएँ। प्रचलित रीति है कि चरणों के आगे चार बार, नाभि के आगे दो बार, मुख के आगे एक बार और फिर पूरे स्वरूप के आगे सात बार आरती घुमाई जाए, पर हर परिवार अपनी परंपरा मानता है।

वैभव लक्ष्मी

- 5 दूसरे हाथ से या किसी और सदस्य द्वारा पूरी आरती में घंटी बजाई जाए।
- 6 अंतिम पद पूरा होने पर देवी के चरणों में एक फूल अर्पित करें और प्रणाम करें।
- 7 थाली सबके पास ले जाएँ। हर व्यक्ति दोनों हथेलियों से ज्योति की लौ के ऊपर से आशीर्वाद लेकर आँखों और सिर से लगाए।
- 8 अंत में पूजा में हुई भूल-चूक के लिए क्षमा माँगें और फिर प्रसाद बाँटें।



कथा: पहला भाग

शीला और उसका सुखी घर

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा



एक बड़े शहर में शीला नाम की एक स्त्री अपने पति के साथ रहती थी। शीला स्वभाव से धार्मिक, शांत और संतोषी थी। वह सुबह-शाम भगवान का नाम लेती, घर को साफ-सुथरा रखती और जो कुछ मिलता, उसी में प्रसन्न रहती। उसका पति भी पहले बहुत समझदार और सज्जन था। वह ईमानदारी से काम करता, किसी की बुराई नहीं करता और शीला का पूरा सम्मान करता था। दोनों का जीवन प्रेम से भरा था और पड़ोसी उनके घर को एक आदर्श गृहस्थी मानते थे।

पर कहते हैं, समय सदा एक-सा नहीं रहता।

वैभव लक्ष्मी



कथा: दूसरा भाग

बुरी संगत और घर की बर्बादी

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

कुछ समय बाद शीला का पति बुरे लोगों की संगत में पड़ गया। उन मित्रों के साथ रहकर वह जुआ खेलने लगा, शराब पीने लगा और घुड़दौड़ में सट्टा लगाने लगा। जल्दी अमीर बनने के लालच में उसने अपनी सारी कमाई और घर की जमा-पूंजी गँवा दी। जब पैसा खत्म हो गया तो वह शीला के गहने भी एक-एक करके ले गया, उन्हें बेच दिया और वह पैसा भी जुए और नशे में उड़ा दिया।

जो घर कभी सुख और शांति से भरा रहता था, उसमें अब गरीबी और कलह ने डेरा डाल लिया। कई दिन तो घर में ठीक से चूल्हा भी नहीं जलता था। पति नशे में देर रात घर लौटता, बात-बात पर चिल्लाता और शीला का अपमान करता। पड़ोसी भी अब उनसे कतराने लगे थे।

फिर भी शीला ने धीरज नहीं छोड़ा। वह चुपचाप सब कुछ सहती रही और मन ही मन भगवान से प्रार्थना करती रही: “हे प्रभु, मेरे पति को सद्बुद्धि दो और हमारे घर में फिर से सुख-शांति लौटा दो।” उसे विश्वास था कि जैसे सुख के बाद दुख आता है, वैसे ही दुख के बाद सुख भी अवश्य आएगा।

वैभव लक्ष्मी

कथा: तीसरा भाग

द्वार पर आई एक बूढ़ी माँ

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

एक दिन दोपहर को किसी ने शीला का दरवाज़ा खटखटाया। शीला सोचने लगी कि इस गरीबी में मेरे घर कौन आया होगा। दरवाज़ा खोला तो सामने एक बूढ़ी माँ खड़ी थीं। उनके चेहरे पर अद्भुत तेज था, आँखों से जैसे स्नेह बरस रहा था और उनका पूरा मुख करुणा से भरा था। उन्हें देखते ही शीला का मन शांत हो गया।

घर में अतिथि के लिए बिछाने को कुछ नहीं बचा था, फिर भी शीला ने आदर से उन्हें भीतर बुलाया और एक पुरानी, फटी चादर बिछाकर बैठाया। माँजी बोलीं, “बेटी शीला, क्या तूने मुझे पहचाना नहीं?” शीला संकोच में पड़ गई, उसे कुछ याद नहीं आ रहा था। माँजी ने मुस्कुराकर कहा, “हर शुक्रवार को लक्ष्मीजी के मंदिर में भजन-कीर्तन होता है। तू भी वहाँ आया करती थी और मैं भी आती हूँ। बहुत दिनों से तू दिखाई नहीं दी, इसलिए तेरा हाल पूछने चली आई।”

माँजी का प्रेम भरा स्वर सुनकर शीला का हृदय भर आया और वह फूट-फूटकर रोने लगी। माँजी ने स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा, “बेटी, सुख और दुख तो धूप-छाँव की तरह आते-जाते रहते हैं। अपना दुख मुझसे कह दे, मन हल्का हो जाएगा।” तब शीला ने अपने पति की बुरी संगत, घर की बर्बादी और अपनी सारी पीड़ा उन्हें कह सुनाई।

वैभव लक्ष्मी



कथा: चौथा भाग

माँजी ने बताया वैभव लक्ष्मी व्रत

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

सारी बात सुनकर माँजी बोलीं, “बेटी, कर्म की गति बड़ी न्यारी है, पर तू धीरज रख। तू माँ लक्ष्मी की भक्त है। माँ लक्ष्मी प्रेम और करुणा की मूर्ति हैं और अपने भक्तों पर सदा ममता रखती हैं। तू विधिपूर्वक वैभव लक्ष्मी व्रत कर। माँ की कृपा से तेरे सब दुख दूर हो जाएँगे।”

शीला ने हाथ जोड़कर व्रत की विधि पूछी। माँजी ने प्रेम से समझाया:

“यह व्रत शुक्रवार को किया जाता है। मन में संकल्प करो कि मैं इतने शुक्रवार, ग्यारह या इक्कीस, श्रद्धा से यह व्रत करूँगी। उस दिन सुबह स्नान करके साफ कपड़े पहनो और दिन भर मन में ‘जय माँ लक्ष्मी’ का स्मरण करती रहो। किसी की निंदा या चुगली मत करो और मन में बुरे विचार मत आने दो।”

“शाम को पूर्व दिशा की ओर मुँह करके आसन पर बैठो। सामने चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर माँ लक्ष्मी का चित्र रखो। चावल की एक छोटी-सी ढेरी बनाकर उस पर जल से भरा तांबे का कलश रखो। कलश पर एक कटोरी रखो और उसमें सोने या चांदी का कोई गहना रखो। गहना न हो तो एक सिक्का रख लो। फिर घी का दीपक और धूप जलाओ, फूल और कुमकुम चढ़ाओ। श्रीयंत्र और माँ लक्ष्मी के आठों स्वरूपों को श्रद्धा से प्रणाम

करो। फिर वैभव लक्ष्मी व्रत कथा पढ़ो, माँ की स्तुति करो और खीर या कोई मीठा प्रसाद चढ़ाओ। आरती करके कलश का जल तुलसी में डाल दो और प्रसाद सबको बाँटकर स्वयं भी ग्रहण करो।”

“जितने शुक्रवार का संकल्प लिया हो, वे पूरे होने पर अंतिम शुक्रवार को विधि से उद्यापन करो। उस दिन खीर का प्रसाद बनाओ, नारियल चढ़ाओ और अपनी सामर्थ्य के अनुसार सात, ग्यारह, इक्कीस या उससे अधिक स्त्रियों को कुमकुम का तिलक लगाकर वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तक भेंट करो, ताकि माँ की महिमा और यह व्रत घर-घर पहुँचे। फिर माँ से प्रार्थना करो कि जैसे आपने मेरी मनोकामना पूरी की, वैसे ही सबकी करना।”

इतना कहकर माँजी ने शीला को आशीर्वाद दिया और चली गई। शीला ने मन ही मन इक्कीस शुक्रवार वैभव लक्ष्मी व्रत करने का संकल्प ले लिया।

वैभव लक्ष्मी

11 / 17





कथा: पांचवां भाग

पहले शुक्रवार से बदलने लगा भाग्य

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा



अगले दिन शुक्रवार था। शीला ने सुबह स्नान किया, साफ कपड़े पहने और दिन भर 'जय माँ लक्ष्मी' का जाप करती रही। घर में अब कोई गहना नहीं बचा था, इसलिए शाम को उसने माँजी के कहे अनुसार कटोरी में एक सिक्का रखा और पूरी श्रद्धा से पूजा की। उसने कथा पढ़ी, शक्कर का प्रसाद चढ़ाया, आरती की, कलश का जल तुलसी में डाला और प्रसाद सबसे पहले अपने पति को दिया।

प्रसाद खाते ही जैसे पति के मन पर से कोई परदा हट गया। उस रात उसने शीला को न डाँटा, न उसका अपमान किया। शीला ने मन ही मन माँ लक्ष्मी को धन्यवाद दिया और उसका विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

शीला हर शुक्रवार उसी श्रद्धा से व्रत करती रही। धीरे-धीरे उसके पति का स्वभाव बदलने लगा। उसने बुरे मित्रों का साथ छोड़ दिया, जुए और शराब से दूर हो गया और अपने किए पर पछताने लगा। फिर वह मन लगाकर ईमानदारी और मेहनत से काम करने लगा। माँ लक्ष्मी की कृपा से उसके काम में बरकत होने लगी। अपनी कमाई से उसने शीला के लिए फिर से गहने बनवाए। घर में एक बार फिर अन्न-धन भरने लगा और पुराना सुख और प्रेम लौट आया।

वैभव लक्ष्मी





कथा: छठा भाग

उद्यापन और माँजी का रहस्य

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

इक्कीस शुक्रवार पूरे होने पर शीला ने अंतिम शुक्रवार को विधिपूर्वक उद्यापन किया। उसने खीर का प्रसाद बनाया, माँ को नारियल चढ़ाया और माँजी के बताए अनुसार सात स्त्रियों को कुमकुम का तिलक लगाकर वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तकें भेंट कीं। फिर उसने माँ लक्ष्मी के चित्र के सामने हाथ जोड़कर कहा, “हे माँ, जैसे आपने मेरी मनोकामना पूरी की, वैसे ही अपने सब भक्तों की करना।”

पूजा के बाद जब शीला ने माँ के चित्र को निहारा, तो उसे उसमें वही करुणा भरी मुस्कान दिखी जो उस दिन बूढ़ी माँ के चेहरे पर थी। तब उसकी समझ में आया कि उस दिन उसके द्वार पर आने वाली माँजी कोई साधारण स्त्री नहीं, स्वयं माँ लक्ष्मी थीं, जो अपनी दुखी भक्त को राह दिखाने आई थीं। शीला का मन भक्ति से भर गया और उसने माँ के चरणों में बार-बार प्रणाम किया।

उस दिन के बाद शीला और उसका पति सुख, सम्मान और प्रेम से जीवन बिताने लगे। दोनों ने आगे भी यह व्रत श्रद्धा से करने का निश्चय किया, और जब भी शीला को कोई दुखी स्त्री मिलती, वह उसे वैभव लक्ष्मी व्रत के बारे में बताती।

हे माँ वैभव लक्ष्मी, जैसे आपने शीला पर कृपा की, उसके पति को सद्बुद्धि दी और उसके घर में सुख-समृद्धि लौटाई, वैसे ही इस कथा को पढ़ने और सुनने वाले सब भक्तों पर अपनी कृपा बनाए रखना। सबके घर में सुख, शांति और सद्भाव बना रहे।

बोलो, जय माँ वैभव लक्ष्मी!

वैभव लक्ष्मी



कथा के बाद

वैभव लक्ष्मी व्रत मंत्र

यह श्लोक वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तक में छपा होता है और शुक्रवार की पूजा में हाथ जोड़कर, देवी के चित्र की ओर देखते हुए बोला जाता है। यह ध्यान श्लोक है, जो देवी के स्वरूप का वर्णन करता है ताकि मन उन पर टिक सके।

या रक्ताम्बुजवासिनी विलासिनी चण्डांशु तेजस्विनी।

या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोल्हादिनी॥

या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोस्वया गेहिनी।

सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती॥

भावार्थ: जो लाल कमल पर निवास करती हैं, जो शोभा से भरी हैं और प्रखर सूर्य के समान तेजस्विनी हैं; जो लाल वर्ण की हैं और लाल वस्त्र धारण करती हैं, श्रीहरि की सखी हैं, जो श्री हैं और मन को आनंदित करती हैं; जो रत्नों के भंडार समुद्र के मंथन से प्रकट हुईं और भगवान विष्णु की गृहिणी बनीं: वे मनोहर भगवती लक्ष्मी, कमल से उत्पन्न पद्मावती, मेरी रक्षा करें।



माँ लक्ष्मी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता॥

वैभव लक्ष्मी





भावार्थ

आरती का सरल अर्थ

टेक: ॐ जय लक्ष्मी माता: हे माँ लक्ष्मी, आपकी जय हो। सृष्टि के पालनहार भगवान विष्णु भी दिन-रात आपकी सेवा करते हैं। यह पंक्ति बताती है कि देवी सदा श्रीहरि के साथ रहती हैं।

उमा रमा ब्रह्माणी: आप ही उमा (पार्वती), रमा (लक्ष्मी) और ब्रह्माणी (सरस्वती) हैं, आप ही संसार की माता हैं। सूर्य और चंद्रमा आपका ध्यान करते हैं और नारद ऋषि आपके गुण गाते हैं।

दुर्गा रूप निरंजनी: आप निर्मल दुर्गा रूप हैं और सुख व संपत्ति देने वाली हैं। भक्तों की मान्यता है कि जो आपका ध्यान करता है, उसे ऋद्धि, सिद्धि और धन प्राप्त होता है।

तुम पाताल-निवासिनी: आप पाताल में भी निवास करती हैं और आप ही शुभ फल देने वाली हैं। आप कर्मों के फल को प्रकट करती हैं और संसार रूपी सागर से पार लगाती हैं।

जिस घर में तुम रहतीं: जिस घर में आप वास करती हैं, वहाँ सारे सद्गुण आ जाते हैं। वहाँ सब कुछ संभव हो जाता है और मन चिंता से नहीं घबराता। बहुत से भक्त इसे इस बात की याद मानते हैं कि स्वच्छ, शांत और प्रेमपूर्ण घर ही देवी का सच्चा स्वागत है।

तुम बिन यज्ञ न होते: आपके बिना कोई यज्ञ नहीं हो सकता और किसी को वस्त्र नहीं मिलते। भोजन और जल का सारा वैभव आपसे ही आता है।

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर: आप शुभ गुणों का सुंदर मंदिर हैं और क्षीरसागर से प्रकट हुई हैं। आपके बिना समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्न कोई नहीं पा सकता। यह समुद्र मंथन की उस कथा की ओर संकेत है जिसमें लक्ष्मी जी प्रकट हुई और भगवान विष्णु का वरण किया।

महालक्ष्मीजी की आरती: जो कोई महालक्ष्मी जी की यह आरती गाता है, उसके हृदय में आनंद भर जाता है और मान्यता के अनुसार उसके पाप दूर हो जाते हैं। यह आरती का फलश्रुति वाला अंतिम पद है।



क्षमा प्रार्थना

समापन प्रार्थना

हे माँ वैभव लक्ष्मी, मैंने अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार आपकी पूजा की है।

पूजा में जाने-अनजाने जो भूल हुई हो, उसे क्षमा करना।

मेरे घर-परिवार में सुख, शांति, सद्बुद्धि और सद्भाव बनाए रखना।

जैसे आपने शीला पर कृपा की, वैसे ही सब भक्तों पर कृपा करना।

जय माँ वैभव लक्ष्मी।

आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं। शब्दों से अधिक महत्व मन के भाव का है।

बोलो माँ वैभव लक्ष्मी की जय।

बोलो माँ महालक्ष्मी की जय।

वैभव लक्ष्मी



वैभव लक्ष्मी

निःशुल्क पुस्तिका

व्रत कब शुरू करें, व्रत के नियम, उद्यापन विधि, लक्ष्मी चालीसा, श्री सूक्त और अंग्रेज़ी में कथा, सब कुछ एक ही जगह पढ़ें।



स्कैन करें या खोलें

vaibhavlakshmi.com

यह पुस्तिका निःशुल्क है। इसे परिवार और मित्रों के साथ साझा करें।